Adda247 GET IT ON Google Play

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग जी.आई.सी. प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2017

हिन्दी

हल प्रश्न पत्र

(परीक्षा तिथि-23.09.2018)

1. इनमें से किस बोली में 'ने' का प्रयोग नहीं होता?

(a) कौरवी (b) अवधी
(c) हरियाणवी (d) मालवी

उत्तर (b) : 'अवधी' बोली में 'ने' का प्रयोग नहीं होता है जबकि 'कौरवी', 'हरियाणवी' और 'मालवी' बोली में 'ने' का प्रयोग होता है। 'अवधी' पूर्वी हिन्दी उपभाषा की बोली है। पूर्वी हिन्दी 'अर्धमागधी' अपभ्रंश से विकसित है।

2. ''तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'' यह काव्यलक्षण किस आचार्य द्वारा निरुपित है?

(a) पण्डितराज जगन्नाथ (b) मम्मट
(c) दण्डी (d) महिमभट्ट

उत्तर (b) : ''तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'' यह काव्यलक्षण आचार्य 'मम्मट' द्वारा निरुपित है जबकि अन्य आचार्यों के काव्यलक्षण इस प्रकार हैं–

आचार्य	काव्यलक्षण
पण्डितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली

3. रस-विवेचन में 'चित्रतुरंगन्याय' की कल्पना इनमें से किस आचार्य ने की?

(a) शंकुक (b) अभिनव गुप्त
(c) भरतमुनि (d) विश्वनाथ

उत्तर (a) : रस-विवेचन में 'चित्रतुरंगन्याय' की कल्पना आचार्य शंकुक ने की। आचार्य शंकुक की यह कल्पना उनके द्वारा दिये गये सिद्धान्त 'अनुमितिवाद' के अन्तर्गत है जबकि अभिनवगुप्त का सिद्धान्त 'अभिव्यक्तिवाद' तथा भरतमुनि का संबंध रस सम्प्रदाय से है।

4. इनमें से किस आचार्य ने काव्यगुणों की संख्या दस मानी है?

(a) क्षेमेन्द्र (b) वामन
(c) भोजराज (d) भरतमुनि

उत्तर (d) : आचार्य भरतमुनि ने काव्यगुणों की संख्या दस मानी है जबकि आचार्य वामन ने काव्यगुणों की संख्या 20 मानी है तथा भोजराज ने 24 काव्यगुणों का वर्णन किया है।

5. भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से नाटक का मुख्य उद्देश्य है:

(a) व्यक्तित्व का परिशोधन (b) चरित्रचित्रण
(c) दृश्यों का प्रस्तुतीकरण (d) रसास्वादन

उत्तर (d) : भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से नाटक का मुख्य उद्देश्य रसास्वादन है। प्रसिद्ध 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ आचार्य भरतमुनि द्वारा रचित है। नाट्यशास्त्र को 'पंचम वेद' भी कहा जाता है।

6. ''जन्म सिन्धु पुनि बंधु, दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चंद बापुरो रंक।।''
इस उद्धरण में अलंकार है:

(a) असंगति (b) व्यतिरेक
(c) अनन्वय (d) प्रतीप

उत्तर (b) : ''जन्म सिन्धु पुनि बंधु, दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चंद बापुरो रंक।।''
इस उद्धरण में व्यतिरेक अलंकार है।
व्यतिरेक अलंकार– जब किसी पद में उपमान की अपेक्षा उपमेय को अधिक बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाए तो वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है; **जैसे–**
जन्म सिंधु .... बापुरो रंक।। पद में उपमान (चन्द्र) की अपेक्षा उपमेय (सिय मुख) की शोभा का उत्कर्ष पूर्ण वर्णन किया गया है। अतः यहाँ व्यतिरेक अलंकार है।

7. 'बनारस अखबार' का प्रकाशन कब शुरू हुआ?

(a) 1840 ई. (b) 1841 ई.
(c) 1844 ई. (d) 1845 ई.

उत्तर (d) : 'बनारस अखबार' का प्रकाशन 1845 ई. में शुरू हुआ। 'बनारस अखबार' (साप्ताहिक) बनारस से प्रकाशित होता था इसके सम्पादक राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द हैं। 'बनारस अखबार' को हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र का प्रथम समाचार पत्र माना जाता है।

8. इंग्लैण्ड से प्रकाशित होने वाले पत्र का नाम है:

(a) हिंदोस्थान (b) भारतमित्र
(c) सदादर्श (d) देशहितैषी

उत्तर (a) : इंग्लैण्ड से प्रकाशित होने वाले पत्र का नाम हिंदोस्थान है। इस समाचार पत्र को 1883 ई. में राजा रामपाल सिंह ने सम्पादित किया यह दैनिक समाचार पत्र है, जबकि विकल्प के अन्य पत्रों का विवरण इस प्रकार है–

पत्रिका	सम्पादक	समय	स्थान
भारतमित्र	रुद्रदत्त	1877 ई.	कलकत्ता
सदादर्श	श्रीनिवास दास	1874 ई.	काशी
देशहितैषी	श्रीनिवास दास	1879 ई.	अजमेर

9. 'चन्दनबाला रास' के रचयिता हैं:

(a) जिनधर्म सूरि (b) विजयसेन सूरि
(c) जिनदत्त सूरि (d) आसगु

उत्तर (d) : 'चन्दनबाला रास' के रचयिता 'आसगु' हैं। अन्य रचनाकारों की रचनाएँ इस प्रकार हैं–

रचनाकार	रचना
जिनधर्म सूरि	स्थूलिभद्र रास
विजयसेन सूरि	रेवंतगिरि रास
जिनदत्त सूरि	उपदेश रसायनरास, चर्चरि, कालस्वरूप कुलक।

Adda247

Test Prime

ALL EXAMS, ONE SUBSCRIPTION

80,000+ Mock Tests

Personalised Report Card

Unlimited Re-Attempt

600+ Exam Covered

20,000+ Previous Year Papers

500% Refund

ATTEMPT FREE MOCK NOW

10. इनमें से 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के कवि नहीं हैं:
(a) धर्मदास (b) अग्रदास
(c) दादू दयाल (d) कबीर दास

उत्तर (b) : 'अग्रदास' 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के कवि नहीं हैं बल्कि रामभक्ति शाखा के कवि हैं। अग्रदास की रचनाएँ हैं- हितोपदेश उपखाणा बावनी, ध्यानमंजरी, रामध्यानमंजरी, कुंडलिया, अष्टयाम या रामाष्टयाम। अग्रदास के शिष्य नाभादास हैं।

11. इनमें से 'दूसरा सप्तक' में संकलित कवि हैं:
(a) रघुवीर सहाय (b) केदारनाथ सिंह
(c) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (d) नेमिचंद्र जैन

उत्तर (a) : रघुवीर सहाय 'दूसरा सप्तक' में संकलित कवि हैं। दूसरे सप्तक का प्रकाशन 1951 ई. में हुआ। इसमें संकलित कवि इस प्रकार हैं- 1. शमशेर बहादुर सिंह 2. भवानीप्रसाद मिश्र 3. शकुन्त माथुर 4. हरिनारायण घनश्याम व्यास 5. नरेश मेहता 6. धर्मवीर भारती 7. रघुवीर सहाय।

12. रसनिष्पत्ति के संबंध में भट्टलोल्लट का मत है:
(a) अनुमितिवाद (b) उत्पत्तिवाद
(c) भुक्तिवाद (d) अभिव्यक्तिवाद

उत्तर (b): रसनिष्पत्ति के संबंध में भट्टलोल्लट का मत 'उत्पत्तिवाद' है। अन्य मत के प्रवर्तक इस प्रकार हैं–

अनुमितिवाद	–	आचार्य शंकुक
भुक्तिवाद	–	भट्नायक
अभिव्यक्तिवाद	–	अभिनवगुप्त

13. निम्नलिखित लक्षणग्रंथों को उनके रचनाकारों से सुमेलित कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर से चयन कीजिए:

लक्षणग्रंथ	रचनाकार
अ. भाषा भूषण	1. भिखारीदास
ब. ललित ललाम	2. पद्माकर
स. काव्य निर्णय	3. मतिराम
द. जगद्विनोद	4. जसवंत सिंह

कूट:

	अ	ब	स	द
(a)	1	3	2	4
(b)	4	2	1	3
(c)	2	4	3	1
(d)	4	3	1	2

उत्तर (d) : लक्षण ग्रंथों एवं उनके रचनाकारों से सुमेलित कूट इस प्रकार हैं–

लक्षण ग्रंथ	रचनाकार
भाषा भूषण	जसवंत सिंह
ललित ललाम	मतिराम
काव्य निर्णय	भिखारीदास
जगद्विनोद	पद्माकर

14. 'विशाल भारत' पत्र के प्रथम संपादक थे:
(a) मोहन सिंह सेंगर
(b) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(c) इलाचंद्र जोशी
(d) पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

उत्तर (d) : 'विशाल भारत' पत्र के प्रथम संपादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे। विशाल भारत एक प्रसिद्ध हिन्दी पत्र था जिसका प्रकाशन सन् 1928 ई. में कोलकाता से आरम्भ हुआ। इसके संस्थापक रामानन्द चट्टोपाध्याय थे। बनारसीदास चतुर्वेदी सन् 1928 से 1937 ई. तक इसका सम्पादन करते रहे।

15. 'सोए पलाश दहकेंगे' शीर्षक नवगीत-संग्रह के रचनाकार हैं:
(a) नचिकेता (b) शंभुनाथ सिंह
(c) माहेश्वर तिवारी (d) यश मालवीय

उत्तर (a) : 'सोए पलाश दहकेंगे' शीर्षक नवगीत-संग्रह के रचनाकार 'नचिकेता' हैं। इनके अन्य गीत-संग्रह– बाइसकोप का गीत, नचिकेता के भजन, मकर चाँदनी का उजास, पर्दा अभी उठेगा, तासा बज रहा है, कोई क्षमा नहीं आदि।

16. 'भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति' किस कवि द्वारा रचित श्लोक का अंश है?
(a) वाल्मीकि (b) कालिदास
(c) तुलसीदास (d) जयदेव

उत्तर (c) : 'भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोति' कवि 'तुलसीदास' द्वारा रचित श्लोक का अंश है। तुलसीदास रामभक्ति शाखा के अन्यतम कवि हैं। तुलसीदास की रचनाएँ हैं– वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली।

17. ''रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त,
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।''
'राम की शक्तिपूजा' कविता में यह कथन किसका है?
(a) लक्ष्मण (b) जाम्बवान
(c) सुग्रीव (d) विभीषण

उत्तर (b) : ''रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त,
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।''
'राम की शक्तिपूजा' कविता में यह कथन जाम्बवान का है। 'राम की शक्तिपूजा' कविता के लेखक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी है। निराला की रचनाएँ हैं– अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीतगुंज, सांध्यकाकली।

18. 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिट्रेचर' के लेखक हैं:
(a) मौलवी करीम उद्दीन (b) एफ.ई.के.
(c) जार्ज अब्राहम गियर्सन (d) एडविन ग्रीब्स

उत्तर (d) : 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिट्रेचर' के लेखक 'एडविन ग्रीब्स' हैं।

लेखक	पुस्तकें
जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन	द मार्डन वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान।
एफ.ई.के.	ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिट्रेचर।

19. रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में इनमें से किस कवि को 'हिंदू जाति का प्रतिनिधि कवि' कहा है?
(a) भूषण (b) सूदन
(c) लाल कवि (d) रहीम

उत्तर (a) : रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में कवि 'भूषण' को 'हिंदू जाति का प्रतिनिधि कवि' कहा है। भूषण की रचनाएँ हैं– शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।

20. 'अग्निलीक' काव्यनाटक (कृति) के रचनाकार हैं:

(a) लक्ष्मीनारायण लाल
(b) सेठ गोविन्ददास
(c) भारत भूषण अग्रवाल
(d) नरेश मेहता

उत्तर (c) : 'अग्निलीक' काव्यनाटक (कृति) के रचनाकार भारतभूषण अग्रवाल हैं। भारतभूषण अग्रवाल की रचनाएँ इस प्रकार हैं– 1. छवि के बंधन 2. जागते रहो 3. मुक्ति मार्ग 4. ओ अप्रस्तुत मन 5. कागज के फूल 6. एक उठा हुआ हाथ 7. उतना वह सूरज है 8. अनुपस्थित लोग।

21. "सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।" सूरदास के संबंध में यह प्रशस्ति कथन किसका है?

(a) ब्रजरत्नदास (b) पं. परशुराम चतुर्वेदी
(c) विट्ठलनाथ (d) नाभादास

उत्तर (d) : "सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।" सूरदास के संबंध में यह प्रशस्ति कथन 'नाभादास' का है। नाभादास ने हिन्दी में भक्तमाल की परम्परा का सूत्रपात किया। इनके गुरु का नाम 'अग्रदास' था। नाभादास ने सन् 1585 ई. के आस पास ब्रजभाषा में 'भक्तमाल' की रचना की। 'भक्तमाल' में 200 कवियों की जीवनवृत्त और उनकी भक्ति की महिमासूचक बातों को 316 छप्पयों में लिखा गया है।

22. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दर्शन' के लेखक हैं:

(a) रामविलास शर्मा
(b) डॉ. नलिनविलोचन शर्मा
(c) डॉ. केसरीनारायण शुक्ल
(d) श्री कृष्णलाल

उत्तर (b) : 'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दर्शन' के लेखक डॉ. नलिनविलोचन शर्मा हैं। रामविलास शर्मा की रचनाएँ हैं- 1. प्रगति और परम्परा 2. साहित्य और संस्कृति 3. साहित्य और संस्कृति 4. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ 5. लोक जीवन और साहित्य 6. स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य 7. आस्था और सौन्दर्य 8. साहित्य स्थायी मूल और मूल्यांकन 9. परम्परा का मूल्यांकन 10. विराम चिह्न।

23. निम्नलिखित में से किसने हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा?

(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. नगेंद्र (d) डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

उत्तर (c) : डॉ. नगेंद्र ने हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा बल्कि डॉ. नगेन्द्र ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ का संपादन किया है। विकल्प में दिये गये अन्य लेखकों के इतिहास ग्रंथ इस प्रकार हैं–

लेखक	पुस्तक
डॉ. रामकुमार वर्मा	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी	1. हिन्दी साहित्य की भूमिका 2. हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास 3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल।
डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के	हिन्दुई साहित्य का इतिहास (तासी ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद)

24. 'बिहारी बिहार' नामक ग्रंथ के रचयिता हैं:

(a) काशीनाथ खत्री (b) बिहारी
(c) राधाचरण गोस्वामी (d) पं. अंबिकादत्त व्यास

उत्तर (d) : 'बिहारी बिहार' नामक ग्रंथ के रचयिता पं. अंबिकादत्त व्यास हैं। अंबिकादत्त व्यास की रचनाएँ हैं- 1. पावस पचासा 2. सुकवि सतसई 3. हो हो होरी। अंबिकादत्त व्यास ने अपने कवि जीवन का आरम्भ कवितावर्द्धिनी सभा में 'पूरी अमी की कटोरिया-सी, चिरंजीवी रहौ विक्टोरिया रानी' समस्या की पूर्ति करके किया और इस पर उन्हें 'सुकवि' की उपाधि प्राप्त हुई थी।

25. हिन्दी साहित्य के आदिकाल को 'सिद्धसामंत युग' नाम किसने दिया है:

(a) चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) मिश्रबंधु

उत्तर (c) : हिन्दी साहित्य के आदिकाल को 'सिद्धसामंत युग' नाम राहुल सांकृत्यायन ने दिया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल का नाम 'बीजवपन काल' रखा एवं मिश्रबंधु ने 'प्रारम्भिक काल' नाम रखा है।

नाम	प्रयोक्ता
चारण काल	जार्ज ग्रियर्सन
वीरगाथा काल	आ. रामचन्द्र शुक्ल
वीरकाल	आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
संधिकाल एवं चारण काल	डा. रामकुमार वर्मा
आदिकाल	आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
आधार काल	सुमन राजे और मोहन अवस्थी

26. विद्यापति इनमें से किस रचना के आधार पर 'मैथिल कोकिल' कहलाए

(a) पदावली (b) कीर्तिपताका
(c) कीर्तिलता (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) : विद्यापति 'पदावली' रचना के आधार पर 'मैथिल कोकिल' कहलाए क्योंकि पदावली की रचना विद्यापति जी ने मैथिली भाषा में किया है। 'कीर्तिपताका' एवं 'कीर्तिलता' की रचना विद्यापति जी ने अवहट्ट भाषा में की।

विभिन्न विद्वानों ने विद्यापति को शृंगारी, भक्त एवं रहस्यवादी कवि माना है जो इस प्रकार है–

शृंगारी	भक्त	रहस्यवादी
हरप्रसाद शास्त्री	बाबू ब्रजनन्दन सहाय	जॉर्ज ग्रियर्सन
रामचन्द्र शुक्ल	श्यामसुन्दर दास	नागेन्द्रनाथ गुप्त
सुभद्रा झा	हजारीप्रसाद द्विवेदी	जनार्दन मिश्र
रामकुमार वर्मा		
रामवृक्ष बेनीपुरी		

27. इनमें से किस कृति की रचना का आधार 'कठोपनिषद्' है?

(a) अंधायुग (b) आत्मजयी
(c) महाप्रस्थान (d) आर्यावर्त

उत्तर (b) : 'आत्मजयी' कृति की रचना का आधार 'कठोपनिषद्' है। 'आत्मजयी' के लेखक कुँवर नारायण हैं। आत्मजयी प्रबन्ध- काव्य है। कुँवर नारायण की कृतियाँ– 1. चक्रव्यूह 2. परिवेशः हम तुम 3. अपने सामने 4. कोई दूसरा नहीं 5. इन दिनों 6. वाजश्रवा के बहाने (प्रबन्ध काव्य)।

28. ''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।'' यह किसका कथन है:

(a) सुमित्रानंदन पंत (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) नंददुलारे वाजपेयी (d) नामवर सिंह

उत्तर (c) : ''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।'' यह कथन नंददुलारे वाजपेयी का है।
डॉ. नगेन्द्र- छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।
डॉ. नामवर सिंह- छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रुढ़ियों मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।

29. 'लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है।' इस काव्य पंक्ति के रचयिता हैं:

(a) ठाकुर (b) भिखारीदास
(c) चिंतामणि (d) द्विजदेव

उत्तर (a) : 'लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है।' इस काव्य पंक्ति के रचयिता 'ठाकुर' हैं। शेष की प्रसिद्ध पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–
भिखारीदास– 'काव्य की रीति सिखी सुकबीन सों देखी सुनी बहुलोक की बातें'।
चिन्तामणि– 'रीति सुभाषा कवित्त की बरनत बुध अनुसार'।

30. 'कबित कह्यो दोहा कह्यो, तुल्यो न छप्पय छंद। बिरच्यो यहै विचारि कै, यह बरवै रस कंद।।' यह काव्य पंक्तियाँ किसकी हैं–

(a) तुलसीदास (b) रहीम
(c) त्रिलोचन शास्त्री (d) भारतेंदु हरिश्चन्द्र

उत्तर (b) : 'कबित कह्यो दोहा कह्यो, तुल्यो न छप्पय छंद।
बिरच्यो यहै विचारि कै, यह बरवै रस कंद।।' यह काव्य पंक्ति रहीम की है। रहीम की रचनाएँ हैं– 1. रहीम सतसई 2. शृंगार सोरठा 3. मदनाष्टक 4. रास पंचाध्यायी 5. बरवै नायिका भेद 6. रहीम रत्नावली।

31. हिन्दी के किस कवि को 'एक भारतीय आत्मा' नाम से अभिहित किया गया है?

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (d) माखनलाल चतुर्वेदी

उत्तर (d) : हिन्दी के कवि 'माखनलाल चतुर्वेदी' को एक 'भारतीय आत्मा' से अभिहित किया गया है। माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएँ हैं- हिमतरंगिनी, हिमकिरीटिनी, पुष्प की अभिलाषा, दीप से दीप जले और वेणु लो गूँजे धरा।

32. इनमें से कौन सा कवि अपने रचनाकाल के अंतिम दौर में प्रगतिवाद के भौतिक दर्शन के साथ-साथ अरविन्द दर्शन से प्रभावित हुआ?

(a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानन्दन पंत
(c) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (d) रामधारी सिंह दिनकर

उत्तर (b) : सुमित्रानन्दन पंत रचनाकाल के अंतिम दौर में प्रगतिवाद के भौतिक दर्शन के साथ-साथ अरविन्द दर्शन से प्रभावित हुए। पंत की रचनाएँ हैं– वीणा, पल्लव, चिदम्बरा, युगवाणी, लोकायतन, युगपथ, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद आदि।

33. तुलसीदास रचित 'विनयपत्रिका' में पदों की कुल संख्या है।

(a) 269 (b) 272
(c) 279 (d) 289

उत्तर (c) : तुलसीदास रचित 'विनयपत्रिका' में पदों की कुल संख्या 279 है। विनयपत्रिका की भाषा ब्रजभाषा है। विनयपत्रिका गोस्वामी तुलसीदास की एक अपूर्व कारयित्री प्रतिभा का उच्छलन है। इस कृति में 'रस शांतस्तथा परम' का कलकल प्रवाह है।

34. 'जूठन' किस लेखक की आत्मकथात्मक कृति है:

(a) ओम प्रकाश वाल्मीकि (b) मोहनदास नेमिशराय
(c) कौशल्या बैसंती (d) डॉ. भगवानदास

उत्तर (a) : 'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथात्मक कृति है। जबकि 'अपने अपने पिंजरे' मोहनदास नैमिशराय, 'दोहरा अभिशाप' कौशल्या बैसंती और 'झोपड़ी से राजभवन' माता प्रसाद की आत्मकथा है।

35. इनमें गौतम बुद्ध के आख्यान पर आधारित नाटक है:

(a) टूटते परिवेश (b) जय-पराजय
(c) अजातशत्रु (d) लहरों के राजहंस

उत्तर (d) : 'लहरों के राजहंस' गौतम बुद्ध के आख्यान पर आधारित नाटक है। 'लहरों के राजहंस' नाटक के लेखक मोहन राकेश हैं। मोहन राकेश के अन्य नाटक हैं- आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे, अण्डे के छिल्के और बहुत बड़ा सवाल इनकी प्रमुख एकांकी हैं।

36. निम्नलिखित निबंध-संग्रहों को उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर से चयन कीजिए:

निबंध-संग्रह	लेखक
अ. मैंने सिल पहुँचाई	1. हरिशंकर परसाई
ब. सुनो भाई साधो	2. शिवप्रसाद सिंह
द. शिखरों के सेतु	3. कुबेरनाथ राय
स. रस आखेटक	4. विद्यानिवास मिश्र

कूट:

	अ	ब	द	स
(a)	1	3	4	2
(b)	4	1	2	3
(c)	2	4	1	3
(d)	4	2	3	1

उत्तर (b) : दिये गये निबंध संग्रहों एवं लेखकों का सुमेलित रूप इस प्रकार हैं–

निबंध-संग्रह	**लेखक**
मैंने सिल पहुँचाई	विद्यानिवास मिश्र
सुनो भाई साधो	हरिशंकर परसाई
शिखरों के सेतु	शिवप्रसाद सिंह
रस आखेटक	कुबेरनाथ राय

37. 'रक्षाबंधन' कहानी के लेखक हैं:

(a) चंद्रधर शर्मा गुलेरी
(b) वृंदावनलाल वर्मा
(c) विश्वभरनाथ शर्मा 'कौशिक'
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (c) : 'रक्षाबंधन' कहानी के लेखक विश्वभरनाथ शर्मा 'कौशिक' हैं। कौशिक प्रेमचन्द परम्परा के ख्याति प्राप्त कहानीकार थे। इनके अन्य कहानी संग्रह हैं- गल्प मंदिर, चित्रशाला (भाग-1 – 1924 ई., भाग-2 -1929 ई.), प्रेम प्रतिमा, मणिमाला, कल्लोल।

38. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी किस धारा के उपन्यासकार हैं:

(a) सांस्कृतिक मिथकीय (b) सामाजिक-सांस्कृतिक
(c) प्रयोगवादी (d) प्रगतिवादी

उत्तर (a) : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'सांस्कृतिक मिथकीय' धारा के उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास हैं- बाणभट्ट की आत्मकथा (1946 ई.), चारू चंद्रलेख (1963 ई.), पुनर्नवा (1973 ई.) अनामदास का पोथा (1976 ई.)।

39. 'परीक्षागुरु' उपन्यास का प्रथम प्रकाशन कब हुआ था:

(a) 1877 ई. (b) 1882 ई.
(c) 1890 ई. (d) 1893 ई.

उत्तर (b) : 'परीक्षागुरु' उपन्यास का प्रथम प्रकाशन सन् 1882 ई. में हुआ था। परीक्षागुरु के लेखक श्रीनिवासदास हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरु' को अंग्रेजी के ढंग का हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है।

40. 'निष्कवच' उपन्यास की लेखिका हैं:

(a) क्षमा कौल (b) सूर्यबाला
(c) मधु काँकरिया (d) राजीसेठ

उत्तर (d) : 'निष्कवच' उपन्यास की लेखिका 'राजीसेठ' हैं। इनका एक उपन्यास 'तत्सम' है। राजीसेठ की कहानी संग्रह हैं– अंधे मोड़ से आगे,तीसरी हथेली, यात्रा मुक्त, दूसरे देश काल में, यह कहानी नहीं, सदियों से, किसका इतिहास, गमे हयात ने मारा, खाली लिफाफा, मार्था का देश, यहीं तक।

41. ''लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।''
यह काव्य पंक्ति किस कवि द्वारा रचित है?

(a) केशवदास (b) मतिराम
(c) नंददास (d) घनानंद

उत्तर (d) : ''लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।'' यह काव्य पंक्ति कवि घनानन्द द्वारा रचित है। शेष इस प्रकार हैं–

पंक्ति	**लेखक**
भाषा बोलि न जानहिं जिनके कुल के दास। भाषा कवि भो मंदमति तेहि कुल केसवदास।।	**–केशवदास**
नृपति नैन कमलनि वृथा, चितवत बासर जाहि। हृदय कमल में हरि लै, कमलमुखी कमलाहि।।	**–मतिराम**
ताही छिन उडुराज उदित रस-रास सहायक। कुंकुम मंडित-बदन प्रिया जनु नागरि-नायक।।	**–नंददास**

42. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' यह किस विधा की रचना है?

(a) एकांकी नाटक (b) निबंध
(c) उपन्यास (d) कहानी

उत्तर (b) : 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' निबन्ध विधा की रचना है। यह हजारीप्रसाद द्विवेदी की रचना है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध इस प्रकार हैं- अशोक के फूल, वसंत आ गया है, मेरी जन्मभूमि, एक कुत्ता और एक मैना, नया वर्ष, दिमाग खाली है, शिरीष का फूल, वर्षा घनपति से घनश्याम तक, कुटज, साहित्य में हिमालय की परम्परा, जीवेम शरदः शतम्, देवदारु, घर जोड़ने की माया, गुरुनानक देव।

43. 'वह सफर था कि मुकाम था' कृति की लेखिका हैं:

(a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग
(c) उषा प्रियंवदा (d) प्रभा खेतान

उत्तर (a) : 'वह सफर था कि मुकाम था' कृति की लेखिका 'मैत्रेयी पुष्पा' हैं। इस पुस्तक में मैत्रेयी पुष्पा ने प्रख्यात लेखक और 'हँस' के संपादक रहे राजेन्द्र यादव पर संस्मरण लिखे हैं, जो किसी उपान्यास या लम्बी कहानी का पाठ सुख देने वाले हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास हैं– स्मृति दंश, बेतवा बहती रही, इदन्नमम, चाक, झूलानट, अल्मा कबूतरी, कहे ईसुरी फाग, त्रियाहठ।

44. इनमें से शब्द और उसके सही अर्थ का एक युग्म गलत है, वह है:

(a) युयुत्सु – युद्ध करने का इच्छुक
(b) मुमुक्षु – मोक्षप्राप्ति का अभिलाषी
(c) जिज्ञासु – जानने की इच्छा रखने वाला
(d) तितीर्षु – तप करने में संलग्न

उत्तर (d) : 'तितीर्षु – तप करने में संलग्न' शब्द और उसके अर्थ का युग्म गलत है। तितीर्षु का अर्थ 'तैरने की इच्छा' रखने वाला होगा जबकि अन्य शब्द एवं उनके अर्थ युग्म सही हैं।

45. 'आँख का अंधा गाँठ का पूरा' इस लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है:

(a) एकदम मूर्ख
(b) जो अपना हित अहित न समझे
(c) मूर्ख किन्तु धनी
(d) बिना बिचारे धन खर्च करने वाला

उत्तर (c) : 'आँख का अंधा गाँठ का पूरा' इस लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ 'मूर्ख किन्तु धनी' है।
लोकोक्ति– लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, तब 'लोकोक्ति' हो जाती है।

46. 'स्वधर्म' शब्द का विलोम है:
(a) अधर्म (b) परधर्म
(c) विधर्म (d) सुधर्म

उत्तर (b) : 'स्वधर्म' शब्द का विलोम 'परधर्म' है। 'अधर्म' का विलोम 'धर्म' होगा।

47. इनमें से अशुद्ध वाक्य है
(a) कल, आज और कल अवकाश रहेगा।
(b) आज मौसम अच्छा है।
(c) अब परीक्षा होने वाली है।
(d) मैंने पत्र भेज दिया।

उत्तर (a) : 'कल, आज और कल अवकाश रहेगा' वाक्य अशुद्ध है। शुद्ध वाक्य होगा 'कल, आज और परसों अवकाश रहेगा'। अन्य वाक्य शुद्ध है जो इस प्रकार हैं-
1. आज मौसम अच्छा है।
2. अब परीक्षा होने वाली है।
3. मैंने पत्र भेज दिया है।

48. 'धर्मबुद्धि' में समास है:
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि
(c) कर्मधारय (d) द्वंद्व

उत्तर (c) : 'धर्मबुद्धि' में कर्मधारय समास है। **कर्मधारय समास-** जिस तत्पुरुष समास के समस्त होने वाले पद समानाधिकरण हों, अर्थात् विशेष्य-विशेषण भाव को प्राप्त हों, कर्ताकारक के हों और लिंग-वचन में समान हो, वहाँ 'कर्मधारय तत्पुरुष समास' होता है, **उदाहरण-** शीतोष्ण (ठण्डा-गरम) कुमारी-क्वाँरी लड़की।

49. 'अन्वय' शब्द का संधि-विच्छेद है:
(a) अनु + वय (b) अनु + अय
(c) अन् + अय (d) अनि + वय

उत्तर (b) : 'अन्वय' शब्द का संधि-विच्छेद 'अनु + अय' है। 'अन्वय' शब्द में यण संधि है। **यण संधि-** यदि इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो 'इ-ई' का य् 'उ-ऊ' का व् और 'ऋ' का 'र्' हो जाता है।
जैसे- यदि+ अपि = यद्यपि
अति + आवश्यक = अत्यावश्यक
अति + उत्तम = अत्युत्तम
अति + ऊष्म = अत्यूष्म
मधु + आलय = मध्वालय

50. इसमें से गलत वर्तनी का शब्द है:
(a) आधीन (b) ज्योत्स्ना
(c) अहर्निश (d) अनुगृहीत

उत्तर (a) : 'आधीन' गलत वर्तनी का शब्द है। इसका सही वर्तनी 'अधीन' है। अन्य शब्द ज्योत्स्ना, अहर्निश, अनुगृहीत सही वर्तनी है।

51. 'याद हो कि न याद हो' - संस्मरण कृति के लेखक हैं:
(a) राजेंद्र यादव (b) अजित कुमार
(c) काशीनाथ सिंह (d) विष्णुकांत शास्त्री

उत्तर (c) : 'याद हो कि न याद हो' संस्मरण-कृति के लेखक 'काशीनाथ सिंह' हैं। अन्य लेखकों के संस्मरण इस प्रकार हैं-

लेखक	संस्मरण
राजेन्द्र यादव	औरों के बहाने, वे देवता नहीं हैं
अजित कुमार	निकट मन में, निकट मन में दूर वन में
विष्णुकांत शास्त्री	स्मरण को पाथेय बनने दो, सुधियां उस चंदन के वन की, पर साथ-साथ चल रही याद।

52. इनमें से भास की कृति है:
(a) बालभारत (b) बालचरित
(c) नैषधचरित (d) नागानंद

उत्तर (b) : 'बालचरित' भास की कृति है। भास की अन्य कृतियाँ हैं- 1. स्वप्नवासवदत्ता 2. प्रतिज्ञा यौगंधरायण 3. दरिद्र चारु दत्त 4. अविमारक 5. प्रतिमा 6. अभिषेक 7. बालचरित 8. पंचरात्र 9. दूतवाक्यम् 10. कर्णभार 11. उरुभंग। जबकि 'बालभारत' राजशेखर की 'नैषधचरित' श्रीहर्ष की तथा 'नागानंद' राजा हर्षवर्धन की कृति है।

53. 'गोधूमचणकम्' में समास है:
(a) इतरेतर द्वंद्व (b) द्विगु
(c) एकशेष द्वंद्व (d) समाहार द्वंद्व

उत्तर (d) : 'गोधूमचणकम्' में 'समाहार द्वंद्व' समास है। इस समास में एक ही तरह के एकाधिक पद मिलकर समाहार (समूह) का रूप धारण कर लेते हैं। समाहार द्वन्द्व एकवचन एवं नपुंसक लिंग में होता है।

54. 'परिश्रम के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता।' वाक्य का संस्कृत में अनुवाद होगा-
(a) परिश्रमस्थ बिना ज्ञानं न भवति।
(b) परिश्रमेण बिना ज्ञानं न प्राप्यते।
(c) परिश्रमं बिना ज्ञानं न अर्जति।
(d) परिश्रमात् बिना ज्ञानं न प्राप्यते।

उत्तर (b) : 'परिश्रम के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता।' वाक्य का संस्कृत में अनुवाद 'परिश्रमेण बिना ज्ञानं न प्राप्यते।' होगा

55. 'कृत' प्रत्यय लगता है:
(a) क्रिया के अंत में (b) संज्ञा के अंत में
(c) सर्वनाम के अंत में (d) विशेषण के अंत में

उत्तर (a) : 'कृत' प्रत्यय क्रिया के अंत में लगता है। प्रत्यय वे शब्द होते हैं जो दूसरे शब्दों के अन्त में जुड़कर अपनी प्रकृति के अनुसार, शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण के अन्त में तद्धित प्रत्यय लगते हैं।

56. औचित्य के आधार पर होता है:
(a) सामर्थ्य - निर्णय (b) संनिधि - निर्णय
(c) अर्थ - निर्णय (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) : औचित्य के आधार पर 'अर्थ - निर्णय' होता है। औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक क्षेमेन्द्र हैं। इनका ग्रंथ 'औचित्य विचार चर्चा' है। इन्होंने औचित्य को रस का प्राण माना है।

57. इनमें से ऊष्म व्यंजन नहीं है:
(a) ह (b) ष
(c) श (d) ल

उत्तर (d) : 'ल' ऊष्म व्यंजन नहीं है। बल्कि अन्तःस्थ व्यंजन है। अन्तःस्थ व्यंजन चार होते हैं- (i) य (ii) र (iii) ल (iv) व।

58. 'प्रत्येक' शब्द में कौन-सी स्वरसन्धि है।

(a) गुण संधि (b) वृद्धि संधि
(c) यण संधि (d) अयादि संधि

उत्तर (c) : 'प्रत्येक' शब्द में 'यण संधि' स्वर सन्धि है। **यण संधि-** यदि इ, ई, उ, ऊ, और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो 'इ-ई' का य्, 'उ-ऊ' का व् तथा ऋ का र् हो जाता है; **जैसे-** यदि + अपि = यद्यपि, अति + आवश्यक = अत्यावश्यक, अनु + अय = अन्वय + प्रति + एक = प्रत्येक

59. 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते'- अलंकार की यह परिभाषा किस आचार्य की है:

(a) भामह (b) दण्डी
(c) उद्‌भट (d) रुद्रट

उत्तर (b) : 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते'- अलंकार की यह परिभाषा आचार्य दण्डी की है। भामह ने 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' परिभाषा देकर काव्य की परिभाषा दिया। 'अलंकार सम्प्रदाय' के प्रतिष्ठापक आचार्य भामह है। भामह ने 'काव्यालंकार' नामक ग्रंथ लिखा। भामह ने 38 अलंकारों का वर्णन किया।

**60. ''परी प्रेम नंदलाल के मोहि न भावत जोग।
मधुप राजपद पाइ कै भीख न माँगत लोग॥''
इस उदाहरण में अलंकार है:**

(a) दृष्टांत (b) विभावना
(c) उदाहरण (d) निदर्शना

उत्तर (a) : ''परी प्रेम नंदलाल के मोहि न भावत जोग।
मधुप राजपद पाइ कै भीख न माँगत लोग।।'' इस उदाहरण में दृष्टांत अलंकार है। **दृष्टांत अलंकार–** जहाँ उपमेय और उपमान के साधारण धर्म में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव दिखाया जाए, वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है।

61. निम्नलिखित काव्यशास्त्रीय आचार्यों का उनके स्थिति काल के अनुसार सही अनुक्रम है:

(a) भामह, कुंतक, वामन, आनन्दवर्धन
(b) कुंतक, वामन, आनन्दवर्धन, भामह
(c) आनन्दवर्धन, कुंतक, भामह, वामन
(d) भामह, वामन, आनन्दवर्धन, कुंतक

उत्तर (d) : काव्यशास्त्रीय आचार्यों का उनके स्थिति काल के अनुसार सही अनुक्रम है–

आचार्य	**सदी (समय)**
भामह	6वीं शती का पूर्वाद्ध
वामन	8वीं शती का उत्तराद्ध
आनन्दवर्धन	9वीं शती का उत्तराद्ध
कुन्तक	10वीं शती का उत्तराद्ध

62. 'काव्यशोभायाः कत्तारो धर्माः गुणाः' काव्यगुण के संदर्भ में यह कथन किस आचार्य का है?

(a) भामह (b) वामन
(c) मम्मट (d) दण्डी

उत्तर (b) : 'काव्यशोभायाः कत्तारो धर्माः गुणाः' काव्यगुण के संदर्भ में यह कथन आचार्य 'वामन' का है। वामन रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं।

63. किस अर्धसम मात्रिक छंद के विषम पदों में 11-11 तथा सम पदों में 13-13 मात्राएँ होती हैं?

(a) सोरठा (b) रोला
(c) चौपाई (d) दोहा

उत्तर (a) : सोरठा अर्द्धसम मात्रिक छंद के विषम चरणों (पादों) में 11-11 तथा सम चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं। 'रोला' में चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। 11 और 13 मात्राओं पर विराम होता है। 'चौपाई' में चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं तथा चरण के अन्त में दीर्घ (गुरु) वर्ण होता है। पदों के अन्तिम अक्षर समान होते हैं। 'दोहा' में चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों में 13 और सम चरणों में 11 मात्राएँ होती हैं।

64. 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका का प्रकाशन कहाँ से होता था?

(a) कलकत्ता (b) इलाहाबाद
(c) कानपुर (d) मिर्जापुर

उत्तर (d) : 'आनन्द कादम्बिनी' का प्रकाशन 'मिर्जापुर' से होता था। यह एक 'मासिक पत्रिका' है। इसका प्रकाशन 1881 ई. में हुआ। इसके सम्पादक बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' थे। अन्य पत्रिका का प्रकाशन इस प्रकार है–

कलकत्ता	उदन्त मार्तण्ड	जुगलकिशोर
इलाहाबाद	हिन्दी प्रदीप	बालकृष्ण भट्ट
कानपुर	ब्राह्मण	प्रताप नारायण मिश्र

65. 'तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं।' यह किसका कथन है?

(a) नगेन्द्र (b) नंददुलारे वाजपेयी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) बच्चन सिंह

उत्तर (c) : 'तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिन्दी भाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं।' यह कथन 'रामचन्द्र शुक्ल' का है।

**66. 'मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत'- ये किस कवि की पंक्तियाँ हैं?**

(a) धर्मवीर भारती (b) कुँवरनारायण
(c) नरेश मेहता (d) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

उत्तर (a) : 'मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ लेकिन मुझे फेंको मत' ये पंक्तियाँ 'धर्मवीर भारती' की हैं। धर्मवीर भारती की रचनाएँ हैं– 1. ठण्डा लोहा 2. अंधा युग 3. कनुप्रिया 4. सात गीत वर्ष 5. देशान्तर

67. इनमें से कौन 'प्रपद्यवाद' से संबंधित नहीं है?

(a) नलिनविलोचन शर्मा (b) प्रयागनारायण त्रिपाठी
(c) नरेश (d) केसरीकुमार

उत्तर (b) : प्रयागनारायण त्रिपाठी 'प्रपद्यवाद' से संबंधित नहीं हैं। बल्कि प्रयागनारायण त्रिपाठी का सम्बन्ध तीसरे तारसप्तक से है। इसका प्रकाशन 1959 ई. है। प्रपद्यवाद को 'नकेन वाद' के नाम से भी जाना जाता है। प्रपद्यवाद का प्रवर्तन नलिन विलोचन शर्मा ने सन् 1956 में प्रकाशित 'नकेन के प्रपद्य' संकलन से किया। नकेन का तात्पर्य नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश के नाम के प्रथम अक्षरों को आधार मानकर नकेन बनता है।

68. 'निराला की कविता' 'जुही की कली' को किस संपादक ने बिना प्रकाशित किये वापस कर दिया था?

(a) श्यायसुन्दर दास (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) प्रेमचन्द (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

उत्तर (d) : 'निराला की कविता' 'जुही की कली' को 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' ने बिना प्रकाशित किये वापस कर दिया था। 'जुही की कली' (1916 ई.) कविता 'परिमल' में संकलित है।

69. ''दुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात।'' यह काव्यपंक्ति किस कृति की है?

(a) चाँद का मुँह टेढ़ा है (b) साकेत
(c) कामायनी (d) यामा

उत्तर (c) : ''दुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात।'' यह काव्यपंक्ति 'कामायनी' की है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं। 'कामायनी' का प्रकाशन 1935 ई. में हुआ था।

70. रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मूलतः किस कृति की भूमिका के रूप में लिखा गया था?

(a) हिन्दी कोविद रत्नमाला (b) हिन्दी शब्द सागर
(c) हिन्दी विश्वकोश (d) धर्मशास्त्र का इतिहास

उत्तर (b) : रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मूलतः 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था। 'हिन्दी कोविद रत्नमाला' श्यामसुन्दर दास का ग्रंथ है।

71. इसमें से कौन सा ग्रंथ लौकिक चरितकाव्य माना जाता है?

(a) भविसयत्त कहा (b) योगसार
(c) परमात्मप्रकाश (d) पाहुड़दोहा

उत्तर (a) : दिये गये विकल्पों में 'भविसयत्त कहा' ग्रंथ लौकिक चरितकाव्य माना जाता है। 'भविसयत्त कहा' के लेखक 'धनपाल' हैं– अन्य ग्रंथों के रचनाकार इस प्रकार हैं–

ग्रंथ	रचनाकार
योगसार	जोइन्दु
परमात्म प्रकाश	जोइन्दु
पाहुड़दोहा	मुनिराम सिंह

72. हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'सम्मेलन पत्रिका' के 'भारतेंदु अंक' के इनमें से अतिथि संपादक थे:

(a) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
(b) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(c) देवीदत्त शुक्ल
(d) सुमित्रानंदन पंत

उत्तर (b) : हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'सम्मेलन पत्रिका' के 'भारतेंदु अंक' के अतिथि संपादक 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'' थे। इन्होंने सन् 1936-37 में सैनिक और विशाल भारत नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। 'प्रतीक' नामक पत्रिका का भी संपादन किया।

73. 'दिनकर' की प्रसिद्ध काव्यकृति 'रश्मिरथी' की कथावस्तु कहाँ से ली गई है?

(a) पूर्णतया कल्पित है (b) भागवत पुराण
(c) रामायण (d) महाभारत

उत्तर (d) : 'दिनकर' की प्रसिद्ध काव्यकृति 'रश्मिरथी' की कथावस्तु 'महाभारत' से ली गई है। 'रश्मिरथी' जिसका अर्थ ''सूर्यकिरणरुपी का सवार'' है, हिन्दी के महान कवि दिनकर द्वारा रचित प्रसिद्ध खण्डकाव्य है। यह 1952 ई. में प्रकाशित हुआ था। इसमें 7 सर्ग हैं।

74. इनमें से किस साहित्येतिहासकार ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिन्दी के गद्यसाहित्य को 'गद्य का आविर्भाव', 'गद्य का प्रवर्तन', 'गद्य का प्रसार' और 'गद्य की वर्तमान गति' नामक खण्डों में विभक्त करके विवेचित किया है?

(a) बच्चन सिंह (b) शिवसिंह सेंगर
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

उत्तर (c) : 'रामचन्द्र शुक्ल' ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिन्दी के गद्यसाहित्य को 'गद्य का आविर्भाव', 'गद्य का प्रवर्तन', 'गद्य का प्रसार' और 'गद्य की वर्तमान गति' नामक खण्डों में विभक्त करके विवेचित किया है।

75. इनमें से एक काव्यसंग्रह 'अज्ञेय' का नहीं है:

(a) आँगन के पार द्वार
(b) धरती
(c) ऐसा कोई घर आपने देखा है
(d) सदानीरा

उत्तर (b) : 'धरती' काव्यसंग्रह 'अज्ञेय' का नहीं है 'धरती' काव्य-संग्रह 'वासुदेव सिंह' का है। इनका उपनाम 'त्रिलोचन' था। इनकी अन्य रचनाएँ- अरघान, तुम्हें सौंपता हूँ, दिगन्त, गुलाब और बुलबुल, ताप के ताए हुए दिन आदि। विकल्प में दी गई अन्य 'रचनाये' अज्ञेय की हैं।

76. 'लघुमानव की धारणा'-किसकी प्रवृत्तिगत विशेषता है:

(a) नई कविता (b) दलित-विमर्श
(c) प्रगतिवाद (d) छायावाद

उत्तर (a) : 'लघुमानव की धारणा'-नई कविता की प्रवृत्तिगत विशेषता है। नयी कविता आन्दोलन का आरम्भ इलाहाबाद की साहित्यिक संस्था परिमल के कवि जगदीश गुप्त, राम स्वरूप चतुर्वेदी और विजयदेव नारायण साही के संपादन में 1954 ई. में प्रकाशित नयी कविता (पत्रिका) से माना जाता है। विजयदेव नारायण साही ने 'नयी कविता' में 'लघु मानव' की प्रतिष्ठा की।

77. इनमें से किस साहित्येतिहास ग्रंथ को किशोरीलाल गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' नाम से अनुवाद करके प्रकाशित कराया?

(a) 'इस्त्वार द ला लियेरात्यूर ऐंदुई-ऐ- ऐंदुस्तानी' को
(b) 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर' को
(c) 'ए हिन्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' को
(d) 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान' को

उत्तर (d) : 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान' (लेखक- ग्रियर्सन) को 'किशोरीलाल गुप्त' ने 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' नाम से अनुवाद करके प्रकाशित कराया। 'इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐंदुई-ऐंदुस्तानी' को लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने 'हिन्दुई साहित्य का इतिहास' नाम से हिन्दी अनुवाद किया।

78. ''सच्चा प्रेम वही है, जिसकी तृप्ति आत्मबलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर।।''
इन पंक्तियों के रचयिता है:

(a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
(c) रामनरेश त्रिपाठी (d) श्रीधर पाठक

उत्तर (c) : ''सच्चा प्रेम वही है, जिसकी तृप्ति आत्मबलि पर हो निर्भर। त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर।।'' इन पंक्तियों के रचयिता 'रामनरेश त्रिपाठी' हैं अन्य लेखकों की पक्तियाँ इस प्रकार हैं–
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ
– माखन लाल चतुर्वेदी
हो जाने दो गर्क नशे में मत पड़ने दो फर्क नशे में
– बालकृष्ण शर्मा नवीन
अटन का समय था, रजनि का उदय था **– श्री पाठक**

79. 'आधा गाँव' इनमें से किस विधा की रचना है?

(a) कहानी (b) उपन्यास
(c) नाटक (d) संस्मरण

उत्तर (b) : 'आधा गाँव' उपन्यास विधा की रचना है। इसके लेखक राही मासूम रजा हैं। इनके अन्य उपन्यास– टोपी शुक्ला, हिम्मत जौनपुरी, ओस की बूँद, दिल एक सादा कागज, सीन 75, कटरा बी आर्जू हैं।

80. 'नूरजहाँ प्रबंधकाव्य' के रचयिता हैं:

(a) कुतुबन
(b) सियारामशरण गुप्त
(c) गुरुभक्त सिंह
(d) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

उत्तर (c) : दिये गये विकल्पों में 'नूरजहाँ प्रबंधकाव्य' के रचयिता हैं। कुतुबन सूफी कवि हैं, इनकी रचना मृगावती है। सियारामशरण गुप्त राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि हैं। इनकी रचनाएँ- मौर्य विजय, विषाद, अनाथ, दूर्वादल, आर्द्रा, आत्मोत्सर्ग आदि। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्विवेदी युग के कवि हैं। इनकी रचना 'प्रिय प्रवास' है।

81. 'कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला' तुलसीदास जी के लिए यह प्रशस्ति-वचन इनमें से किसका है?

(a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(b) जगदम्बाप्रसाद 'हितैषी'
(c) नाभादास
(d) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

उत्तर (a) : 'कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला' तुलसीदास जी के लिए यह प्रशस्ति-वचन अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का है।

82. 'नई समीक्षा : नए संदर्भ' किसकी आलोचना-कृति है?

(a) नन्दकिशोर आचार्य (b) रमेशकुंतल मेघ
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) डॉ. रामविलास शर्मा

उत्तर (c) : 'नई समीक्षा नए संदर्भ' 'डॉ. नगेन्द्र' की आलोचनात्मक कृति है। इनकी अन्य आलोचनात्मक कृतियाँ– सुमित्रानन्दन पंत, साकेतः एक अध्ययन, रीतिकाव्य की भूमिका, रससिद्धान्त, नयी समीक्षाः नये संदर्भ, साहित्य का समाजशास्त्र इत्यादि हैं।

83. 'जंक्शन' कहानी के लेखक हैं:

(a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय
(c) दूधनाथ सिंह (d) यशपाल

उत्तर (a) : 'जंक्शन' कहानी के लेखक 'मुक्तिबोध' हैं। काठ का सपना, सतह से उठता आदमी इनके अन्य कहानी संग्रह हैं। जबकि विपथगा, शरणार्थी, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप, अमरवल्लरी अज्ञेय के कहानी संग्रह हैं। सपाट चेहरे वाला आदमी, सुखांत, निष्कासन दूधनाथ सिंह के कहानी संग्रह हैं। परदा, मक्रील, आदमी का बच्चा तथा धर्मरक्षा यशपाल द्वारा लिखित कहानियाँ हैं।

84. 'शृंखला की कड़ियाँ' की मुख्य वस्तु हैं:

(a) स्वाधीनता-आन्दोलन (b) दलित-विमर्श
(c) आदिवासी-विमर्श (d) स्त्री-विमर्श

उत्तर (d) : 'शृंखला की कड़ियाँ' की मुख्य विषय वस्तु स्त्री-विमर्श है। सन् 1942 ई. में प्रकाशित इस कृति में सही अर्थों में स्त्री विमर्श की प्रस्तावना है जिसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में नारी की दशा, दिशा एवं संघर्षों पर महादेवी ने अपनी लेखनी चलायी है। 'शृंखला की कड़ियाँ' निबन्ध विधा की रचना है।

85. राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित 'तिब्बत की सीमा पर' किस विधा की रचना है?

(a) रेखाचित्र (b) यात्रावृत्त
(c) रिपोर्ताज (d) डायरी

उत्तर (b) : राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित 'तिब्बत की सीमा पर' यात्रावृत्त विधा की रचना है। इनके अन्य प्रमुख यात्रावृत्त से सम्बन्धित रचनाएँ इस प्रकार हैं– मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा, किन्नर देश में, घुमक्कड़ शास्त्र, एशिया के दुर्गम भूखण्ड आदि।

86. 'सूरदास' प्रेमचन्द के किस उपन्यास का प्रमुख पात्र है?

(a) कर्मभूमि (b) प्रेमाश्रय
(c) सेवासदन (d) रंगभूमि

उत्तर (d) : 'सूरदास' प्रेमचन्द के द्वारा लिखित 'रंगभूमि' उपन्यास का प्रमुख पात्र है। रंगभूमि का हिन्दी रूपान्तर 1925 ई. में उर्दू उपन्यास 'चौगाने हस्ती' से किया गया। इस उपन्यास के अन्य पात्रों में सोफिया, भरतसिंह, सुभागी, जाह्नवी हैं।

उपन्यास	वर्ष	पात्र
सेवासदन	1918 ई.	सुमन, गजाधर, शान्ता इत्यादि
कर्मभूमि	1933 ई.	अमरकांत, समरकान्त मैना, सुखदा इत्यादि
प्रेमाश्रम	1922 ई.	प्रेमशंकर, मनोहर, दुखरन, भगत इत्यादि

87. 'आवारा मसीहा' इनमें से किस साहित्यकार की जीवनी है?

(a) रवीन्द्रनाथ ठाकुर (b) बंकिमचंद्र बनर्जी
(c) शरतचंद्र चटर्जी (d) नागार्जुन

उत्तर (c) : 'आवारा मसीहा' 'शरतचंद्र चटर्जी' की जीवनी है। यह 1974 ई. में प्रकाशित हुई। इसके लेखक विष्णु प्रभाकर जी हैं।

88. 'मजदूरी और प्रेम' शीर्षक निबंध के लेखक की एक रचना है:

(a) साहित्य की महत्ता (b) आचरण की सभ्यता
(c) मेरी जन्मभूमि (d) बनजारा मन

उत्तर (b) : 'मजदूरी और प्रेम' शीर्षक निबंध के लेखक की एक रचना 'आचरण की सभ्यता' है। इस निबन्ध के लेखक सरदार पूर्ण सिंह जी हैं। इनके कुल 6 निबन्ध हैं जो इस प्रकार हैं– सच्ची वीरता, पवित्रता, कन्यादान, अमरीका का मस्तकवि वाल्ट ह्विटमैन।

89. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध संग्रह 'चिन्तामणि' के अब तक कितने भाग प्रकाशित हुए हैं?

(a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

उत्तर (d) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध संग्रह 'चिन्तामणि' के अब तक 'चार' भाग प्रकाशित हुए हैं।

निबन्ध संग्रह	**संपादक**
चिन्तामणि (भाग–1)	रामचन्द्र शुक्ल
चिन्तामणि (भाग–2)	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
चिन्तामणि (भाग–3)	नामवर सिंह
चिन्तामणि (भाग–4)	कुसुम चतुर्वेदी एवं ओम प्रकाश सिंह

90. विधा की दृष्टि से 'अस्ति और भवति' कृति क्या है?

(a) आत्मकथा (b) पत्र-साहित्य
(c) उपन्यास (d) निबंध

उत्तर (a) : विधा की दृष्टि से 'अस्ति और भवति' आत्मकथा है। यह विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की आत्मकथा है।

91. 'बंगाल का अकाल' नामक रिपोर्ताज किसकी रचना है?

(a) डॉ. धर्मवीर भारती (b) रांगेय राघव
(c) शिवदान सिंह चौहान (d) उपेंद्रनाथ 'अश्क'

उत्तर (*) : 'बंगाल का अकाल' रिपोर्ताज के लेखक 'प्रकाश चन्द्र गुप्त' हैं, जो कि विकल्प में नहीं है। रांगेय राघव का रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' है। रांगेय राघव ने अपने 'विषाद मठ' नामक उपन्यास में 'बंगाल के अकाल' का चित्र प्रस्तुत किया है। धर्मवीर भारती ने 'युद्ध यात्रा' नाम से रिपोर्ताज लिखा। शिवदान सिंह चौहान ने लक्ष्मीपुरा, मौत के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई नाम से तथा उपेन्द्रनाथ अश्क ने 'पहाड़ों में प्रेममय संगीत' नाम से रिपोर्ताज लिखा।

92. 'तीस-चालीस-पचास' उपन्यास के लेखक हैं:

(a) केशवप्रसाद मिश्र (b) भैरवप्रसाद गुप्त
(c) राजेन्द्र यादव (d) प्रभाकर माचवे

उत्तर (d) : 'तीस-चालीस-पचास' (1973 ई.) उपन्यास के लेखक 'प्रभाकर माचवे' हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं– परन्तु, दर्द के पैबंद, एकतारा, लापता आदि। भैरवप्रसाद गुप्त ने 'सती मैया का चौरा', काशी बाबू, भाग्यदेवता, अन्तिम अध्याय, शोले, मशाल आदि उपन्यासों की रचना की। प्रेत बोलते हैं, उखड़े हुए लोग, कुलटा, शह और मात, एक इंच मुस्कान, अनदेखे अनजाने पुल आदि राजेन्द्र यादव के उपन्यास हैं।

93. 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना कब हुई?

(a) 1800 ई. में (b) 1805 ई. में
(c) 1809 ई. में (d) 1810 ई. में

उत्तर (a) : 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना 10 जुलाई, 1800 ई. में तत्कालीन गवर्नर जनरल 'लार्ड वेलेजली' ने की थी। इसमें हिन्दी के प्राध्यापक 'जान गिलक्राइस्ट' थे। लल्लू लाल तथा सदल मिश्र भाषा मुंशी थे।

94. हिन्दी का पहला 'रेडियो नाटक' माना जाता है:

(a) सीमारेखा (b) राधाकृष्ण
(c) सेठ बाँकेलाल (d) युगसंधि

उत्तर (b) : हिन्दी का पहला रेडियो नाटक 'राधाकृष्ण' को माना जाता है।

95. 'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक हैं:

(a) दूधनाथ सिंह (b) रामदरश मिश्र
(c) रामविलास शर्मा (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) : 'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक 'रामविलास शर्मा' हैं। इनकी अन्य पुस्तकें हैं– भारतीय सौन्दर्य बोध और तुलसीदास, लोक जीवन और हिन्दी साहित्य, परम्परा का मूल्यांकन आदि। दूधनाथ सिंह ने सपाट चेहरे वाला आदमी, निराला: आत्महन्ता आस्था आदि लिखा है।

96. इनमें से कौन-सी कृति 'आत्मकथा' विधा में है?

(a) कलम का सिपाही
(b) क्या भूलूँ क्या याद करूँ
(c) अतीत के चलचित्र
(d) जहाज का पंछी

उत्तर (b) : 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा है। जबकि 'कलम का सिपाही' अमृतराय द्वारा लिखित प्रेमचन्द की जीवनी है। 'अतीत के चलचित्र' महादेवी वर्मा का रेखांचित्र है और 'जहाज का पंछी' इलाचंद्र जोशी का उपन्यास है।

97. 'वन्दे वाणी विनायकौ' इनमें से किसका निबंध-संग्रह है?

(a) रामवृक्ष बेनीपुरी
(b) विवेकी राय
(c) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(d) कुबेरनाथ राय

उत्तर (a) : 'वन्दे वाणी विनायकौ' रामवृक्ष बेनीपुरी का निबंध-संग्रह है। विवेकीराय के निबन्ध हैं– किसानों का देश, त्रिधारा, जुलूस रुका है, आम रास्ता नहीं है। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का नयी पीढ़ी नये विचार, जिंदगी मुस्कराई, माटी हो गई सोना और कुबेरनाथ राय का प्रिया नीलकण्ठी, रस आखेटक, गंधमादन, विषाद योग, निषाद बाँसुरी आदि निबंध हैं।

98. निम्नलिखित में से ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानी-संग्रह है?

(a) दिवास्वप्न (b) नमक का कैदी
(c) छतरी (d) अपाहिज

उत्तर (c) : 'छतरी', सलाम, घुसपैठिए आदि ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी संग्रह है। ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्यकार की श्रेणी में आते हैं। 'दिवास्वप्न' लक्ष्मण सिंह बिष्ट बटरोही की कहानी है। 'नमक का कैदी' नरेन्द्र कोहली का कहानी संग्रह है।

99. 'कविकण्ठाभरण' के रचनाकार हैं:

(a) दण्डी (b) क्षेमेन्द्र
(c) केशव मिश्र (d) धनंजय

उत्तर (b) : 'कविकण्ठाभरण' के रचनाकार 'क्षेमेन्द्र' हैं। औचित्य विचार चर्चा, सुवृत्त तिलक और दशावतार चरित भी क्षेमेन्द्र की रचनाएँ हैं। क्षेमेन्द्र को औचित्य संप्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। दण्डी का 'काव्यादर्श' और धनंजय के ग्रंथ का नाम 'दशरूपक' है।

100. ''यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते तो जैसे अव्यवस्थित, व्याकरणविरुद्ध और ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखायी पड़ी थी, उसकी परम्परा जल्दी न रुकती।'' यह कथन किसका है?

(a) रामचंद्र शुक्ल (b) श्यामसुन्दर दास
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) गणपतिचंद्र गुप्त

उत्तर (a) : ''यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते तो जैसे अव्यवस्थित, व्याकरणविरुद्ध और ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखायी पड़ी थी, उसकी परम्परा जल्दी न रुकती।'' यह कथन 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' का है, जो उन्होंने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के लिए कहा है।

101. काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'काव्यमीमांसा' के लेखक हैं:

(a) भरतमुनि (b) विश्वनाथ
(c) राजशेखर (d) दण्डी

उत्तर (c) : 'काव्यमीमांसा' ग्रंथ के लेखक 'राजशेखर' हैं। भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र', विश्वनाथ का 'साहित्यदर्पण' और दण्डी का ग्रंथ 'काव्यादर्श' है। राजशेखर काव्यशास्त्र के पण्डित थे। इनके अन्य ग्रंथ हैं- बाल रामायण, कर्पूरमंजरी, बाल भारत।

102. इनमें से कालिदास की प्रथम काव्यकृति है:

(a) रघुवंश (b) मेघदूत
(c) कुमारसंभव (d) ऋतुसंहार

उत्तर (d) : 'ऋतुसंहार' कालिदास की प्रथम काव्यकृति मानी जाती है। कालिदास की रचनाएँ हैं–
नाटक– मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्
महाकाव्य– कुमारसंभवम्, रघुवंशम्
खण्डकाव्य– मेघदूत, ऋतुसंहार

103. इनमें से कौन सी एक रचना महाकाव्य नहीं है?

(a) प्रसन्नराघव (b) शिशुपालवध
(c) कुमारसंभव (d) किरातार्जुनीय

उत्तर (a) : 'प्रसन्नराघव' महाकाव्य नहीं है अपितु यह जयदेव का नाटक है। 'शिशुपालवध' महाकवि माघ का महाकाव्य, 'कुमारसंभव' महाकवि कालिदास का और 'किरातार्जुनीयम्' भारवि का महाकाव्य है। 'गीतगोविन्द' जयदेव का गीतिकाव्य है।

104. 'मालतीमाधव' किसकी रचना है?

(a) भास की (b) भरतमुनि की
(c) भारवि की (d) भवभूति की

उत्तर (d) : 'मालतीमाधव' भवभूति की रचना है जबकि भास का 'स्वप्नवासवदत्ता' नाटक है। भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' की रचना की है। भारवि की रचना 'किरातार्जुनीयम्' है। भवभूति की अन्य रचनाएँ हैं- महावीर चरितम्, उत्तरामचरितम्।

105. ''रचना यदि जीवन के अर्थ का विस्तार करती है, तो आलोचना रचना के अर्थ का''। यह कथन इनमें से किस आलोचक का है?

(a) रामचन्द्र शुक्ल का (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी का
(c) रामस्वरूप चतुर्वेदी का (d) मैथ्यू आर्नल्ड का

उत्तर (c) : ''रचना यदि जीवन के अर्थ का विस्तार करती है, तो आलोचना रचना के अर्थ का''। यह कथन 'रामस्वरूप चतुर्वेदी' जी का है। आचार्य शुक्ल ने लिखा है- ''समालोचना का सूत्रपात हिन्दी में एक प्रकार से भट्टजी और चौधरी साहब ने ही किया।'' हजारी प्रसाद द्विवेदी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न मानवतावादी आलोचक हैं।

106. जब वाक्य के मध्य में कोई शब्द या पद छूट जाता है, तब उसे पूरा करने के लिए उस स्थान पर कौन-सा विराम चिह्न लगाकर उसके ऊपर लिखा जाता है?

(a) अपूर्णसूचक विराम चिह्न (b) अर्धविराम चिह्न
(c) अल्पविराम चिह्न (d) हंसपद विराम चिह्न

उत्तर (d) : जब वाक्य के मध्य में कोई शब्द या पद छूट जाता है, उसे पूरा करने के लिए उस स्थान पर 'हंसपद विराम चिह्न' (^) लगाकर उसके ऊपर लिख दिया जाता है। हिन्दी के कुछ महत्त्वपूर्ण विराम चिह्न - अर्द्धविराम (;), निर्देशक (–), योजक (-) , लोपविराम (......), विस्मय विराम (!) प्रश्न विराम (?) तथा उपविराम (:)।

107. 'असंभव काम करना' का अर्थक मुहावरा है:

(a) आसमान के तारे तोड़ना।
(b) आसमान सिर पर उठाना।
(c) आसमान पर दिमाग होना।
(d) आसमान पर चढ़ा देना।

उत्तर (a) : 'असंभव काम करना' का अर्थ मुहावरा है 'आसमान के तारे तोड़ना'। आसमान सिर पर उठाना का अर्थक है 'बहुत अधिक उत्पात मचाना या उपद्रव खड़ा करना'। आसमान पर चढ़ा देना मुहावरे का अर्थ है 'अधिक सम्मान देना'।

108. इनमें से शुद्ध वर्तनी का शब्द है:

(a) कृशांगिनी (b) कृषांगी
(c) कृशांगी (d) कृसांगी

उत्तर (c) : 'कृशांगी' शुद्ध वर्तनी का शब्द है जबकि कृशांगिनी, कृषांगी और कृसांगी वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध शब्द है।

109. 'सौदामिनी' का पर्यायवाची शब्द है:

(a) विबुध (b) शक्र
(c) क्षणप्रभा (d) कासार

उत्तर (c) : सौदामिनी का पर्यायवाची शब्द 'क्षणप्रभा' है। इसके अन्य पर्याय हैं–विद्युत, चपला, तड़ित, दामिनी आदि। विबुध देवता का पर्याय है।

110. इनमें से कौन-सा शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होता है?

(a) प्राण (b) भक्ति
(c) शिशु (d) पुस्तक

उत्तर (a) : 'प्राण' शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होता है। अन्य शब्द भक्ति, शिशु और पुस्तक एकवचन वाले शब्द हैं।

111. 'तदाकार' का शुद्ध संधि-विच्छेद है:

(a) तद् + आकार (b) तत् + आकार
(c) तदा + कार (d) तदा + आकार

उत्तर (b) : 'तदाकार' का शुद्ध संधि-विच्छेद 'तत् + आकार' है। 'तदाकार' व्यंजन संधि है। **नियम–** यदि क्, च्, ट्, त्, प् के परे वर्णों का तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण ग, घ, ज, झ, ड, ढ, ध, ब, भ अथवा य, र, ल, व अथवा कोई स्वर हो तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा अक्षर ग्, ज्, ड्, द्, ब् हो जायेगा। जैसे- वाक् + ईश = वागीश, सत् + आचार = सदाचार, सत् + आशय = सदाशय।

112. इनमें से एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है, वह शब्द है:

(a) प्रदर्शित (b) अहोरात्र
(c) इकतारा (d) भाष्कर

उत्तर (d) : 'भाष्कर' शब्द की वर्तनी अशुद्ध है। इसका शुद्ध वर्तनी 'भास्कर' होगा। अन्य विकल्प प्रदर्शित, अहोरात्र और इकतारा शुद्ध वर्तनी वाले शब्द हैं।

113. निम्नलिखित वाक्यों में से अपादान परसर्ग से युक्त वाक्य है:

(a) हम कान से सुनते हैं।
(b) मोहन से उठा नहीं जाता।
(c) राम ने अपने पुत्र से नाता तोड़ लिया।
(d) रावण राम के बाण से मारा गया।

उत्तर (c) : राम ने अपने पुत्र से नाता तोड़ लिया। अपादान परसर्ग से युक्त वाक्य है। अपादान परसर्ग (से) अलग होने के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

114. इनमें से 'अज्ञ' का पर्यायवाची शब्द नहीं है:

(a) विज्ञ (b) अनभिज्ञ
(c) मूर्ख (d) मूढ़

उत्तर (a) : 'अज्ञ' का पर्यायवाची 'विज्ञ' नहीं है बल्कि अज्ञ का विलोम शब्द 'विज्ञ' है। अन्य विकल्प अनभिज्ञ, मूर्ख, मूढ़, 'अज्ञ' के पर्यायवाची शब्द हैं।

115. विभक्तिसूचक प्रत्यय को कहते हैं:

(a) टिप् (b) सुप्
(c) गुप् (d) टुप्

उत्तर (b) : 'सुप्' विभक्तिसूचक प्रत्यय को कहते हैं। 'सुप्' प्रत्यय से युक्त शब्द को सुबन्त कहा जाता है, इनमें कुल 21 प्रत्यय होते हैं। जिस शब्द के अन्त में 'सुप्' हो उस शब्द को 'सुबन्त' कहते हैं; **जैसे-** रामः इस प्रत्यय में 'सुप्' प्रत्यय है अतः यह शब्द सुबन्त हुआ। यह शब्द अकारान्त है, अजन्त है, स्वरान्त है।

116. 'हरित्रातः' समास-पद का विग्रह होगा:

(a) हरे त्रातः (b) हरौ त्रातः
(c) हरिणा त्रातः (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) : 'हरित्रातः' समास-पद का विग्रह 'हरिणा त्रातः' होगा। जिसका अर्थ 'हरि द्वारा रक्षा की गयी'। हरित्रातः तृतीया तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

117. 'जगति' जगत् शब्द के किस विभक्ति का रूप है।

(a) चतुर्थी (b) पंचमी
(c) षष्ठी (d) सप्तमी

उत्तर (d) : 'जगति' जगत् शब्द का सप्तमी विभक्ति का रूप है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भीः
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पंचमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

118. 'पँवारी' इनमें से किस बोली से संबंधित है?

(a) ब्रज (b) खड़ीबोली
(c) बुंदेली (d) अवधी

उत्तर (c) : 'पँवारी' बुन्देली बोली से संबंधित है। 'बुन्देली' पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत आती है। पश्चिमी हिन्दी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत पाँच बोलियाँ आती हैं जो इस प्रकार हैं– ब्रजभाषा, हरियाणवी, कन्नौजी, कौरवी, बुन्देली। पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत दक्खिनी बोली को हरदेव बाहरी ने मान्यता दी है।

119. 'पूर्वी हिन्दी' की बोलियों का विकास हुआ है:

(a) शौरसेनी अपभ्रंश से (b) अर्धमागधी अपभ्रंश से
(c) माधगी अपभ्रंश से (d) पैशाची अपभ्रंश से

उत्तर (b) : 'पूर्वी हिन्दी' का विकास 'अर्धमागधी अपभ्रंश' से हुआ है। पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत तीन बोलियाँ आती हैं जो इस प्रकार हैं- 1. अवधी 2. बघेली 3. छत्तीसगढ़ी।

120. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन सुमेलित है:

(a) ग - अघोष (b) फ - अल्पप्राण
(c) स - ऊष्म (d) ठ - सघोष

उत्तर (c) : 'स - ऊष्म' सुमेलित है। अन्य विकल्प सुमेलित रूप नहीं है। इनका सुमेलित रूप इस प्रकार होगा-
ग - घोष, फ - महाप्राण, ठ - घोष।